।।हरीओम्।।

# डॉ. वसुधा विनोद देव

५, पवनसुत अपार्टमेंट,
मोहन भाजी भंडार
तापडीया नगर, अकोला
निवास : फोन (0724) 2434625
मो. 919422959764,

अधिव्याख्याता
शासकीय अध्यापक महाविद्यालय,
अकोला - ४४४ ००१
कार्यालय : फोन (0724) 2433765
फॅक्स नं. 0724 2437369

ईमेल – vasudhadeo@yahoo.com, vasuhadeo@gmail.com


माननिय महोदय,

हरी ओम -

मी डॉ. वसुधा वि. देव, अकोला येथे शासकीय अध्यापक महाविद्यालयात अधिव्याख्याता ह्या पदावर कार्यरत आहे. प.पू.गुरूदेवांच्या कृपेने व प.पू. स्वामी पुरूषोत्तमानंद सरस्वती ह्यांच्या शुभप्रेरणेतून मी, "प.पू. स्वामी चिन्मयानंद यांच्या शैक्षणिक विचारांचा आधुनिक शिक्षणक्रमास अनुसरून विश्लेषणात्मक अभ्यास " ह्या विषयावर संशोधन प्रकल्प करित आहे. प्रस्तुत प्रकल्पास विद्यापीठ अनुदान आयोगामार्फत अनुदान ही मला प्राप्त झाले आहे. प.पू. स्वामी पुरूषोत्तमानंद सरस्वती ह्यांच्या मार्गदर्शनात हे कार्य सुरू आहे.

मा. महोदय, प्रस्तुत कार्यात आपलेही सहकार्य व मार्गदर्शन माझेकरिता अतिशय मोलाचे आहे. आपण अनेक वर्षापासून शिक्षण क्षेत्राशी निगडित आहात, तसेच आपला शिक्षणा बाबतचा अनुभव हा विस्तृत व सखोल आहे. आपल्या अनुभवाचा फायदा निश्चितपणे माझ्या प्रकल्प कार्यास पूर्णत्वास नेईल. या पत्रासोबत मी स्वामी चिन्मयानंद यांच्या शैक्षणिक विचारांवर आधारित एक पडताळा सूची तयार केली असून ती आपणाकडे देत आहे. कृपया त्यातील सुचनेनूसार पूर्ण करावी. आपले सहकार्य आहेच.

ईश्वर सेवेत,
आपली नम्र

डॉ. वसुधा वि. देव
अकोला.

(१)

## पडताळा सूची

१) नाव : कांबळे आर. आर.

२) पूर्णपत्ता व फोन नं. : ज्ञानदीप अध्यापक महाविद्यालय, [illegible]

3) पद : [illegible] शैक्षणिक अर्हता : [illegible]

४) किती वर्षांपासून शिक्षण क्षेत्राशी निगडित आहात ? :

सूचना : प.पू.स्वामी चिन्मयानंद यांच्या विचारांना अनुसरून खाली काही शैक्षणिक विधाने दिली आहेत. ह्या विधानांचे प्रतिबिंब प्रचलित माध्यमिक शिक्षण विषयक विचारांमध्ये आढळते किंवा नाही. ह्याकरिता प्रत्येक विधानासमोर असहमत (अ), अंशतः सहमत (अस), सहमत (स) असे ३ पर्याय दिले आहेत. योग्य त्या पर्यायावर ✔ खूण करा.

| | | (अ) | (अस) | (स) |
|---|---|---|---|---|
| 1) | आज शिक्षणामुळे सामान्य योग्यतेत वाढ झाली पण आपल्या कर्माच्या क्षेत्रात ज्ञानाचा उपयोग करण्याची क्षमता विकसित झाली नाही. | ☐ | ☑ | ☐ |
| 2) | व्यक्तिमत्त्व विकासाकरिता हृदयाचे शिक्षण (Education of Heart) महत्त्वाचे आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 3) | व्यक्तिमत्त्वाच्या पुनर्निर्माणाठी सम्यक जीवनात बौद्धिक शिक्षण व मनाची पुनर्व्यवस्था आवश्यक आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 4) | ज्ञान आवश्यक आहेच पण त्याच सोबत ह्याची उपयोजनही आवश्यक आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 5) | जेव्हा शास्त्रज्ञानाला मनाच्या माध्यमातून आत्मसात केले जाते व त्याचा अभ्यास केला जातो तेव्हा ते आपल्या कृतीला नवीन आयाम निर्माण करते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 6) | केवळ निर्देशन म्हणजे शिक्षण नाही कारण निर्देश दिले जातात व शिक्षण प्राप्त केले जाते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 7) | निर्देश बाहेरून दिले जातात पण शिक्षक शिष्याच्या हृदयातील प्रज्वलीत व गुरुद्वारा संरक्षित आंतरिक वस्तु आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 8) | "Self Cleansing" ही प्रक्रिया शिक्षणाच्या माध्यमातून व्हायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 9) | शालेय व व्यावसायिक शिक्षण पूर्ण केल्यावर बाह्यजगात पाउल टाकतांना विश्वाच्या रचनेत आपले नेमके स्थान काय आहे हे कळायला हवे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 10) | आज विद्यार्थी शिक्षित होतो पण ज्ञानी होत नाही. | ☐ | ☑ | ☐ |
| 11) | नैतिक सौदर्य, सांस्कृतिक महानता, राष्ट्रीय संघटन, रचनात्मक उत्पादनक्षमता, अनुशासीत उन्नती हे गुण शिक्षणातून विकसित व्हायला हवे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 12) | अहंकाररहित कर्म करण्याची भावना म्हणजेच यज्ञभावना व्यक्तीमध्ये विकसित व्हायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 13) | शांतता ही बाह्य परिस्थितीने प्रस्थापित होत नाही तर यज्ञ भावनेने तयार होते. | ☐ | ☑ | ☐ |
| 14) | सर्व साक्षर झाले म्हणजे सुशिक्षित झाले असे म्हणता येणार नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 15) | बाह्य उपचारांनी नविन विचारांचे रोपण होऊ शकते पण शिक्षणाचे अंतिम लक्ष आत्मपरिवर्तन आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 16) | Transfusion of Idea नको शिक्षणातून Transformation आवश्यक आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 17) | विद्यार्थ्यांला उच्च आदर्शाप्रत न्यायचे असेल तर गुरूला शिष्याच्या बौद्धिक स्तरापर्यंत येऊन त्याचा बौद्धिक स्तर वाढवाव लागेल. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 18) | पुस्तकातून मिळालेले ज्ञान मनन चिंतनाने आत्मसात करावे लागते त्यानंतर काही काळ त्यावर सराव करावा लागतो. | ☐ | ☐ | ☑ |

| | | (अ) | (अस) | (स) |
|---|---|---|---|---|
| 19) | शिक्षण ही शिष्यांची आत्मज्योत आहे. जी शिक्षक जोपासतात. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 20) | शिक्षणातुन व्यक्तीचा Mental Attitude बनायला हवा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 21) | ईश्वराच्या न्यायाशी मानवाने गैरवर्तन करू नये हा पर्यावरण शिक्षणामागील दृष्टिकोन असावा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 22) | वर्तमान काळात मुलांच्या सुंदर स्वभावाची निर्मिती करण्यात यावी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 23) | बालकांना खरा विचार करावयास शिकवायला हवे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 24) | आज मुलांना असे शिक्षण मिळावे की त्यांनी विनाशकारी निषेधात्मक भावनांचा अंगीकार करु नये त्याचे जीवन रचनात्मक असावे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 25) | शिक्षणातून सांस्कृतिक नुतनीकरण आवश्यक आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 26) | उदात्त ध्येय जर व्यक्तीसमोर असेल तर व्यक्तीला त्याच्या क्षमतांचा शोध लागतो. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 27) | राष्ट्राची समृद्धी राष्ट्राची प्रगती हे मानवाचे ध्येय हवे | ☐ | ☐ | ☑ |
| 28) | शिक्षणाचे ध्येय Labour किंवा Worker निर्माण न करता Man of acheivement निर्माण करणे हा आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 29) | Stop dirting and posioning the river, the river will purify हा पर्यावरण शिक्षणाबाबत दृष्टीकोन हवा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 30) | मानवात शारीरिक,मानसिक,बौद्धिक व अध्यात्मिक असे चार प्रकारचे व्यक्तित्व असतात. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 31) | चारही व्यक्तीत्वाचा एकात्मिक विकासानंतर मानवाचा व्यक्तीमत्व विकास घडून येतो. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 32) | व्यक्तीमत्त्व हे कर्मप्रधान बुद्धिप्रधान व भावनाप्रधान असते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 33) | व्यक्तीच्या मन आणि बुद्धीमध्ये ताळमेळ नसल्यामुळे व्यक्तिमत्त्व लंगडे पडते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 34) | व्यक्तीमत्त्व पांगळे बनल्याने जीवनातील आव्हाने माणुस पेलू शकत नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 35) | ज्याने आपल्या मन बुद्धिला योग्य शिक्षण देऊन त्यांच्यात सुसंवाद निर्माण केला आहे तोच परिपूर्ण मानव होय. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 36) | शिक्षणातून मन व बुद्धी असा समतोल विकास अपेक्षित आहे पण तो आज होतांना आढळत नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 37) | आयुष्यातील द्वंद्व पेलण्याची क्षमता शिक्षणातून व्यक्तीमध्ये निर्माण व्हायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 37) | जीवनात कोणत्याही परिस्थितीत मनाचा समतोल राखण्याची कला मानवामध्ये निर्माण व्हायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 38) | मनबुद्धीचा समतोल राखणे म्हणजे अहंकाराचे विस्मरण होय हे शिक्षणातून साध्य व्हायला हवे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 39) | सतत व प्रामाणिक आत्मप्रयत्नाशिवाय आत्मोन्नती व आंतरिक विकास शक्य होणार नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 40) | वर्तमान, भूत व भविष्य ह्या तिनही काळाबाबत विचार हे व्यक्तीमत्त्वाचे नाशाचे तीन स्त्रोत आहेत. | ☐ | ☑ | ☐ |
| 41) | व्यक्तीमत्त्वाचा नाश रोखण्यासाठी पुढील तीन उपाय आहेत. | | | |
| | अ) इंद्रियाची द्वारे संयत करणे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| | ब) मनाला हृदयाच्या ठिकाणी स्थिर करणे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| | क) निरंतर मनाच्या एकाग्रतेचा अभ्यास करणे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| | ड) ओम् ह्या अक्षराचे उच्चारण करणे. | ☐ | ☑ | ☐ |
| 42) | व्यक्तीमत्त्वाचे आंतरिक घटक हे प्रत्येक व्यक्तीमध्ये समान असतात. | ☐ | ☑ | ☐ |
| 43) | व्यक्तीमत्त्व संकल्पनेत सत्व, रजो व तम गुणांचा विचार हा प्राधान्याने करण्यात येतो. | ☐ | ☐ | ☑ |

| | | (अ) | (अस) | (स) |
|---|---|---|---|---|
| 44) | मानवांचे आंतरिक व्यक्तीमत्त्व महत्त्वाचे आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 45) | मानव आपल्या आंतरिक जगतानुसार आपले बाह्य जग जगतो. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 46) | मानवाचे चारित्र्य व त्यांचे व्यक्तीमत्त्व हे त्यांच्या बाह्य जगताचे अनुभव निश्चित करित असतात. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 47) | आंतर व्यक्तीमत्त्वाच्या पुनर्समायोजनाशिवाय बाह्य जगाचा विकास होऊ शकत नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 48) | अंतर्गत सौंदर्य वाढविल्याशिवाय Quality of life सुधारणार नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 49) | सकारात्मक सद्गुणांचे हृदय व सृजनशील बौद्धिक मूल्य असल्याशिवाय मानव समाज सुद्धा बनणार नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 50) | केवळ भौतिक समृद्धी म्हणजे जीवनाचे ध्येय नाही तर ते साधन आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 51) | स्वतःला जाणून घेणे हेच जीवनाचे ध्येय आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 52) | जीवनाचे ध्येय हे परिपूर्ण सुख असलेच पाहिजे की जेथे सर्व संघर्ष संपुष्टात येऊन शांतता प्रस्थापित होते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 53) | जीवनात आनंद प्राप्त करण्यासाठी स्वसमायोजन आवश्यक आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 54) | आत्मसंयमामुळे आंतरिक व्यक्तिमत्त्व सबल होते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 55) | आत्मसंयमन व इंद्रीय नियंत्रणासाठी सुसंस्कार आवश्यक आहेत. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 56) | मनाच्या पूनर्शिक्षणाच्या द्वारा आत्मसंयमाची प्राप्ती होऊ शकते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 57) | जीवन ध्येयांच्या प्राप्तीसाठी एकात्म व्यक्तीमत्त्वाचा विकास करावा लागेल. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 58) | पुढील जीवन ध्येय ही मानवाच्या उन्नतीसाठी आवश्यक आहेत. | ☐ | ☐ | ☐ |
| | 1) To realised pure awareness | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 2) To rediscovery of self | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 3) To gain peace and Joy | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 4) Detachment from body mind and intellect. | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 5) Detachment from low values | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 6) Detachment from ownership. | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 7) Self control | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 8) Self critisim | ☐ | ☐ | ☐ |
| | 9) Self development | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 10) Self less work | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 11) Self realigetion | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 12) Self Education | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 13) Self effort | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 14) Self Improvement | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 15) Self perfection | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 16) Self recognition | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 17) Rehabilitation of personality | ☐ | ☐ | ☑ |
| | 19) Re-management of personality. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 59) | केवळ संपादन करणे आणि खर्च करणे व त्याचकरिता जीवन व्यतीत करणे हे जीवनध्येय संकुचित आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |

| | (अ) | (अस) | (स) |
|---|---|---|---|
| 60) बाह्य विषयवस्तुवर अवलंबून नसणाऱ्या पूर्ण समाधान व आनंदाची प्राप्ती करून घेणे हे जीवनाचे ध्येय आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 61) आध्यात्मिक सामर्थ्य वृध्दी हेच भौतिक आव्हानांना एकमेव उत्तर आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 62) मानवाने "मी पणाच्या जोखडातून स्वतःचे मुक्तता करू घ्यायला हवी" | ☐ | ☐ | ☑ |
| 63) जीवनाचा शोध घेतल्यांनेच मानवी जीवनाची दुःखे नष्ट होतील. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 64) प्रत्येक व्यक्तीमध्ये सुप्त, दिव्य व क्षमता असतात. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 65) मानव म्हणजे चारित्र्य. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 66) जीवनात सुस्पष्ट व स्वतंत्र असे दोन मार्ग असतात. त्यापैकी योग्य मार्गाची निवड ही मानवाला अंतिम ध्येयापत घेऊन जाते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 67) मन आणि बुद्धीचा समतोल विकास झाल्यास मानवी जीवनात सुसंवाद निर्माण होतो. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 68) आज मन आणि बुद्धी दुर्लक्षित राहिल्यामुळे मानवाचा आंतरिक विकास दुर्लक्षित आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 69) मन–बुद्धीची गुणवत्ता आणि पोत ह्यावरच व्यक्तीमत्त्वाची गुणवत्ता निर्धारित होते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 70) मनाचे संस्करण आणि बुद्धीचे प्रबोधन करूनच व्यक्तीचा व्यक्तीमत्वात उन्नती घडवून आणता येते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 71) आज मन आणि बुद्धी केवळ दुर्लक्षित नाही तर त्याशी फारकत झालेली आपणास आढळते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 72) बाह्य अव्हानांना स्वीकारून व त्याच्याशी सामाना करून व्यक्तीमत्त्वात समतोल राखता येईल. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 73) शारीरिक दृष्टया आरोग्य संपन्न, मनाने आनंदी, बुद्धीने तिक्ष्ण, आत्मिक दृष्टया स्थीर असा समाज शिक्षणातून निर्माण व्हायला हवा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 74) भविष्यकालीन सुखाची तयारी हे व्यक्तीचे जीवनध्येय आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 75) अंतर्बाह्य मनावर स्वामित्व मिळविणे हे मानवाचे ध्येय आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 76) उच्च आदर्श समोर ठेऊन समर्पण भावनेने कर्म केल्यास मन शुद्ध होते व अशा मनात ज्ञान रूजते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 77) प्रभावी अध्ययनासाठी भावना व विचारांच्या उपकरणांना शुद्ध करण्याची व त्याची जुळणी करण्याची आवश्यकता आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 78) विज्ञान प्रयोगशाळेत ज्याप्रमाणे साधनांची जुळवाजुळव केल्याशिवाय प्रयोग करता येत नाही त्याचप्रमाणे अध्ययनासाठी विविध मानसिक उपकरणांची जुळवाजुळव आवश्यक ठरते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 79) कोणत्याही शास्त्राचे अध्ययन करण्यासाठी त्या शास्त्राबाबत आदर श्रद्धा व पूज्यभाव असावा लागतो. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 80) प्रभावी अध्यापनासाठी गुरूच्या सान्नीध्याची आवश्यकता आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 81) तुलना करणे हा आकलनाचा एक मार्ग आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 82) काही उच्च आदर्श प्राप्त करण्यासाठी चुका आणि शिका ह्या पद्धतीचा आपण उपयोग करावयास हवा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 83) व्यक्तीचे जन्मपूर्व अध्ययनही त्याच्या व्यक्तीमत्त्व विकासाच्या दृष्टिकोनातून महत्त्वाचे आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |

(अ)(अस)(स)

84) प्रभावी अध्ययनासाठी खालील बाबींची आवश्यकता आहे.
अ) ब्रम्हचार्य ☐ ☐ ☑
ब) शुद्ध अन्नसेवन ☐ ☐ ☑
क) शुद्ध विचार ☐ ☐ ☑
ड) नियमित ईशचिंतन ☐ ☐ ☑

85) आंतरराष्ट्रीय शांततामय जीवनासाठी, मानवाला त्यांच्या जीवनात जास्तीत जास्त शांतता मिळविण्यासाठी शांतीपाठाची आवश्यकता आहे. ☐ ☐ ☑

86) जगाला शांततेकडे जायचे असेल व सांस्कृतिक परिपूर्णतेच्या अधिक विशाल मंदिराकडे जायचे असेल तर नित्य शांतीपाठाची आवश्यकता आहे. ☐ ☐ ☑

87) जेव्हा कार्य दिसून येते तेव्हा बुद्धीला ते समजून घेण्याच्या प्रयत्न म्हणून त्याच्या कारणांचा शोध घ्यावयास पाहिजे. ☐ ☐ ☑

88) कार्यकारण भाव शोधन हा बुद्धीचा कधीही न संपणारा खेळ असतो म्हणून अध्ययनासाठी कार्यकारण भाव शोधन पद्धती महत्त्वाची ☐ ☐ ☑

89) प्रभावी अध्ययनासाठी चिंतन पद्धत महत्त्वाची आहे ☐ ☐ ☑

90) व्यक्तीमत्त्व विकसित करण्यासाठी आत्मनिरीक्षण पद्धत महत्त्वाची आहे. ☐ ☐ ☑

91) अध्यापनासाठी चर्चा पद्धत व प्रश्नोत्तर पद्धत स्वयंशोधन पद्धत महत्त्वाची आहे. ☐ ☐ ☑

92) स्वतःचे मुल्यांकन करणे स्वतःचे बदलचे निदान करणे, आणि आपण प्रत्यक्षात कोण आणि कसे आहोत हे समजणे ही भावनिक बुद्धीमत्ता वाढविण्यासाठी आवश्यक आहे. ☐ ☐ ☑

93) आत्मनिरीक्षण व आत्मविश्लेषण ही स्वयंअध्ययनाची प्रभावी पद्धती आहे. ☐ ☐ ☑

94) आत्मपरीक्षण अध्ययन पद्धतीत आत्मनिरीक्षण, शोधन, निषेध व बदली योजना हे टप्पे महत्त्वाचे ठरतात. ☐ ☐ ☑

95) अध्ययनासाठी श्रवण, मनन निदीध्यासन आवश्यक आहे.

96) Self cleansing ह्या प्रक्रियेसाठी Moral Living, Ethical standards, virtues, cultural values ह्यांचा अंतर्भाव करण्यात आला आहे. ☐ ☐ ☑

97) श्रवण पद्धतीने अध्ययन दृढ होते.

98) श्रवण पद्धतीत पुढील क्षमता विकसित होतात.
1) Ability of understanding 2) Self awareness 3) Self application ☐ ☐ ☑

99) अध्ययनासाठी Learning Mind ची आवश्यकता आहे. ☐ ☐ ☑

100) बाह्य जगाचे अध्ययन करण्यासाठी बौद्धिक विश्लेषण पद्धती योग्य आहे. ☐ ☐ ☑

101) विविध शास्त्रातील ज्ञान हे औपाधिक ज्ञान आहे परिणामी त्या शास्त्राला मर्यादा आहेत. ☐ ☐ ☑

102) ज्ञान आणि विज्ञान ह्यातील फरक व्यक्तीला समजायला हवा. ☐ ☐ ☑

103) तत्वज्ञ आणि शास्त्रज्ञ ह्यांच्यातील फरक इतकाच की त्यांच्या अन्वेषणाचे क्षेत्र भिन्न आहे. ☐ ☐ ☑

104) विज्ञान हे प्रायः आपल्या सभोवतालच्या जगातील वस्तुभाव आणि त्यांचे आकृतीबंध ह्याचे पुनर्समायोजन आणि पुनर्आखणी करून सुख मिळवून देण्याची आशा बाळगते. ☐ ☐ ☑

105) विज्ञानाने मानवाला चिकित्सक दृष्टीकोन दिला पण स्वयंअध्ययनाचा चिकित्सक दृष्टीकोन दिला नाही. ☐ ☑ ☐

(अ)(अस)(स)

106) एखाद्याला शिष्य म्हणून स्वीकारल्यानंतर त्याला ममतेने प्रेमाने मार्गदर्शन करणे हे गुरूचे कर्तव्य आहे. ☐ ☐ ☑

107) गुरूला शिष्याबद्दल अपत्यप्रेम असावे.

108) शिष्याने आपल्या आज्ञेचे पालन करावे असे जर वाटत असेल तर गुरूने शिष्याच्या शंकाचे निरसन करावे. ☐ ☐ ☑

109) गुरूशिष्यात प्रेमाचे संबंध निर्माण झाल्यावर गुरूला शिकविण्याची उर्मी येते. ☐ ☐ ☑

110) तु पैसे दे मी शिकवतो अशी व्यापारी वृत्ती गुरूच्या ठिकाणी नको. ☐ ☐ ☑

111) ज्या ठिकाणी प्रेम, मित्रत्व, स्वातंत्र, परस्पर समज ह्याचे सहानुभूतीचे वातावरण असते अशाच ठिकाणी बुद्धीचा मनाचा चांगला विकास होतो. ☐ ☐ ☑

112) गुरुबद्दल श्रद्धा आदर पुण्यबुद्धी गौरवाची नम्रवृत्ती ह्या चौकटीत राहून शिष्याने चर्चा करावी. ☐ ☐ ☑

113) शिक्षकांनी विद्यार्थ्यांमध्ये स्वतंत्यरित्या प्रत्येक गोष्टीचा अनुभव घेण्याचे सामार्थ्य निर्माण करावयाची प्रेरणा निर्माण करावयास हवी. ☐ ☐ ☑

114) जेव्हा गुरू शिष्यासोबत परिपूर्ण ताळमेळ साधतो तेव्हाच गुरू त्याला ज्ञान प्रदान करतो. ☐ ☐ ☑

115) विषयाचे अध्ययन करण्यासाठी विद्यार्थ्यांमध्ये किमान ग्रहणशिलता असावयला हवी. ☐ ☐ ☑

116) प्रभावी अध्ययनासाठी विद्यार्थ्यामध्ये अध्ययनाबाबत रूची असावी त्या विषयाबाबत आदर असावा. ☐ ☐ ☑

117) शिक्षकाने आपल्या उच्चारात आणि विचारात समन्वय साधवा. ☐ ☐ ☑

118) ग्रहण केलेले ज्ञान स्वतःजवळ सुरक्षित ठेवण्याची क्षमता विद्यार्थ्यांत असावी. ☐ ☐ ☑

119) आचार्य व छात्र ह्यांचा एकमेकांशी सुसंवादी होतो तेव्हाच ज्ञानदानाची प्रक्रिया सुरू होते. ☐ ☐ ☑

120) ज्याला लोभ व अहंकार माहित नाही व जो सदा सद्चरित असतो तोच खरा आचार्य होय. ☐ ☐ ☑

121) गुरू हा केवळ ध्वनिमुद्रीका नको तर तो ज्ञानाने आचारणाने परिपूर्ण हवा. ☐ ☐ ☑

122) चांगले गुरू हे आपल्या शिष्याची स्वतंत्रपणे चर्चा करण्याची शक्ती गुदमरून टाकून देणारे नसतात. ☐ ☐ ☑

123) विद्यार्थी तेव्हाच शिस्तप्रिय होईल, जेव्हा शिक्षक सदाचारी होतील.

124) मानव संस्कृतीची दखल, नैतिक दर्जा, किंवा सदाचाराची झळाळी विद्यार्थ्याच्या व्यक्तीमत्वाला प्रदान करायची असेल तर विद्यार्थ्याने आपल्या मनात प्रेम पूज्यभाव व सख्यात्व ह्या भावना बाळगुन शिक्षकाजवळ जाणे आवश्यक आहे. ☐ ☐ ☑

125) गुरूचे आचरण हे शुद्ध असायला हवे कारण शिष्य त्याच्या बाह्य सवयीचे अनुकरण करतात. ☐ ☐ ☑

126) गुरू हा उदार अंतकरणाचा उदार दयाळू व सहिष्णु असावा. ☐ ☐ ☑

127) विद्यार्थ्याला गुरूचा उपदेशाच्या प्रति अरूची असेल तर काहीही ग्रहण करू शकणार नाही त्याच्या अंतःकरणात काहीही झीरपु शकणार नाही. नविन संकल्पना मुळ धरू शकणार नाही. ☐ ☐ ☑

128) शिक्षकाने निर्देश देऊन मुलांना ज्ञान आत्मसात करण्यास प्रयत्न करावयास हवे. ☐ ☐ ☑

(अ)(अस)(स)

129) शिक्षकांमध्ये खालील गुण असायला हवेत.

1) Living the Ideals that have been intellectually comprehended during the studies (Satyam) ☐ ☐ ☑

2) The practice of what is right and proper as indicate in the scripture ☐ ☐ ☑

3) A spirit of self sacrifice and self denial ☐ ☐ ☑

4) Control of the senses. ☐ ☐ ☑

5) Tranquility of mind ☐ ☐ ☑

6) Doing ones duty towards humanity ☐ ☐ ☑

130) राष्ट्र हे नागरिकांनी बनते जर नागरिक बलवान कुशल परिक्रमी आणि त्यागी असतील तर राष्ट्रही बलवान होते. ☐ ☐ ☑

131) केवळ भुखंडावर वास्तव्या करणाऱ्या लोकांचा समूह म्हणजे राष्ट्र नव्हे तर हा लोकसमूह जेव्हा सुसंघटीत कार्यक्रमासाठी एकत्रित येतो आणि समान ध्येय गाठण्यासाठी निष्ठेने झटत असतो. तेव्हाच राष्ट्राची घडण होते. ☐ ☐ ☑

132) राष्ट्राचे सामर्थ्य व गुणात्मकता ही व्यक्तीचे सामर्थ्य व गुणात्मकता यावर अवलंबून आहे. ☐ ☐ ☑

133) एकात्मतेची भावना निर्माण करण्यासाठी धार्मिक तत्त्वाचे संस्कार करावे लागतील. ☐ ☐ ☑

134) जेव्हा एखादा जनसमूह प्रदीर्घ काळपर्यत विशिष्ट भौगौलिक क्षेत्रात जीवनाच्या काही तात्त्विक मूल्यांचा आणि सद्‌गुणांचा आदर करित जीवन जागत असतो व त्यातून जो जीवन सुगंध पसरतो त्यास संस्कृती म्हणतात. ☐ ☐ ☑

135) Adaptation to new environment हे जीवन ध्येय आहे. ☐ ☐ ☑

136) "Material and spiritual welfare of all" is a great goal brining about integration. ☐ ☐ ☑

137) राष्ट्रीय व भावनिक एकात्मता घडवून आणायची असेल तर उत्कृष्ट व्यक्तीमत्त्वाच्या आदर्शाचे उदा. विद्यार्थ्यांसमोर ठेवावे लागतील. ☐ ☐ ☑

138) विद्यार्थ्याला आपल्या शिक्षकाला केवळ प्रश्न करण्याचे स्वातंत्र्यच नाही तर उत्तर प्राप्त करण्याचा अधिकार आहे. ☐ ☐ ☑

139) ध्येयाच्या प्रति भक्ती आणि समर्पकता, कर्मयोगाचे आचारण, समाजसेवा, हृदयशुद्धी संस्कृतीविकास हे आत्मशिक्षणासाठी आवश्यक अनुशासन आहे. ☐ ☐ ☑

140) इतरांच्या हक्कांची जाणीव ठेवली तर ते शांती व समृद्धीच्या मार्गावर देशाला नेते ही जाणीव मानवाची विकसित व्हायला हवी. ☐ ☐ ☑

141) भारतीय राज्यघटनेने मानवी स्वातंत्र्यास मान्यता दिलीपण त्यासोबतच अनेक आदेश व नियमसुद्धा त्यात दिले आहे ह्या बाबत व्यक्तीला भान हवे. ☐ ☐ ☑

142) आत्मसंयमन व आत्माशिस्त हीच खरी शिस्त आहे. ☐ ☐ ☑

143) जगताशी योग्य संबंध राखण्याची कला आपणास माहित असेल तरच आपण आपल्या व्यक्तीमत्त्वाला शिस्त लावू शकतो. ☐ ☐ ☑

144) केवळ शारीरिक शिस्त पुरेशी नाही त्याबरोबर विद्यार्थ्यांमध्ये मानसिक शिस्तही आवश्यक आहे. ☐ ☐ ☑

145) आंतरिक व बाह्य मनाच्या कार्यात सुसंवाद निर्माण करणे हेच मानवाचे ध्येय आहे. ☐ ☐ ☑

(८)

| | | (अ) | (अस) | (स) |
|---|---|---|---|---|
| 146) | बहिर्मूख मन व आतर्मूख मन दोन्ही बाजू समन्वयाचे काम केल्यासच मानवाच्या व्यक्तीमत्वात समन्वय निर्माण होतो. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 147) | जीवनातील विविध समस्यांना सामोरे जाण्याची क्षमता मानवामध्ये निर्माण व्हायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 148) | जीवनध्येय व जीवनमार्ग ह्यात समन्वय असावा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 149) | धर्म म्हणजे Low of Being | ☐ | ☐ | ☑ |
| 150) | खऱ्या धर्माचा आशयलोकांपर्यंत पोहाचायला हवा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 151) | वर्णव्यवस्थेचा खरा आशय आजही समाजापर्यंत पोहोचलेला नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 152) | संस्कृती संवर्धन व सांस्कृतिक जतन महत्त्वाचे आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 153) | संस्कृतीचे आध्यात्मिक संस्कृतीचे शिक्षण घ्यायला हवे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 154) | संस्कृतीचे रक्षण करणाऱ्या महानुभवांच्या जीवनाचे व कार्याचे ज्ञान व्यक्तीला करून द्यावे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 155) | बहुजन समाजाच्या मनातून संस्कृतिबाबत निरर्थक भिती काढून टाकल्याशिवाय पुनरूत्थान होऊ शकत नाही. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 156) | अध्यात्मिक अधिकार हा मानवाचा सर्वश्रेष्ठ मानवाधिकार आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 157) | स्वतःवर प्रभुत्व मिळविणे हा मानवाचा विशेष अधिकार आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 158) | शिक्षणातून Standard fo living and standard of life दोन्हीचा विकास व्हायला हवा. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 159) | देशातील उर्ध्वयु स्वतः ठामपणे जगत असतात. तेव्हाच जीवनाची मूल्य पुनरूजीवीत होतात. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 160) | देशाचा पुढारी जर चांगला असेल तर देशाचे नागरिक आपोआप त्याचे अनुकरण करतील. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 161) | देशाचे नेते जेव्हा उच्च जीवनाचा विचार करतात त्याचवेळी तात्त्विक व्यावहारिक मुल्यांचे व अध्यात्मिकतेचे पुनरूज्जीवन देशात मुळ धरू शकते. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 162) | आत्मसंयमन सदाचार व नैतिक मूल्ये ह्याचे शिक्षण महत्त्वाचे आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 163) | व्यक्तीची संकल्पशकती वृद्धीगत व्हायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 164) | मनाला उच्च आदर्शाचे ध्येय देणे आवश्यक आहे. | | | |
| 165) | हे विश्वची माझे घर ही भावना दृढ व्हायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 166) | स्वतःचे सत्य स्वरूप जाणुन घेणे हा मानवाचा जन्मसिद्ध अधिकार आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 167) | नैतिक मूल्य हे जीवनाचे अभिन्न अंग कसे बनेल ह्याची प्रक्रिया महत्त्वाची आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 168) | पूर्ण विश्व हे घर असून सर्व प्राणी हे त्याचे निवासी आहे ही सहअस्तीत्वाची भावना व्यक्तीमध्ये निर्माण होणे महत्त्वाचे आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 169) | If people come togather with common Ideal or goal to which they are edicated there is integration | ☐ | ☐ | ☑ |
| 170) | शांतता पूर्ण व आनंदात सहजीवन जगणे हा मानवाचा विशेषाधिकार आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 171) | ज्ञानग्रहण हे ज्ञानाकडून अज्ञाताकडे होते | ☐ | ☐ | ☑ |
| 172) | स्थानिकतेकडून वैश्विकतेपर्यंत नेणारे ज्ञान असावे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 173) | जे ज्ञान पाठयपुस्तकात मिळत नाही ते ज्ञान बाहेरून प्राप्त करण्याची क्षमता व्यक्तीत निर्माण करायला हवी. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 174) | संस्कृत भाषेचे अध्ययन हे आवश्यक आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |
| 175) | व्यक्ती हा पर्यावरणाचाच एक भाग आहे. | ☐ | ☐ | ☑ |